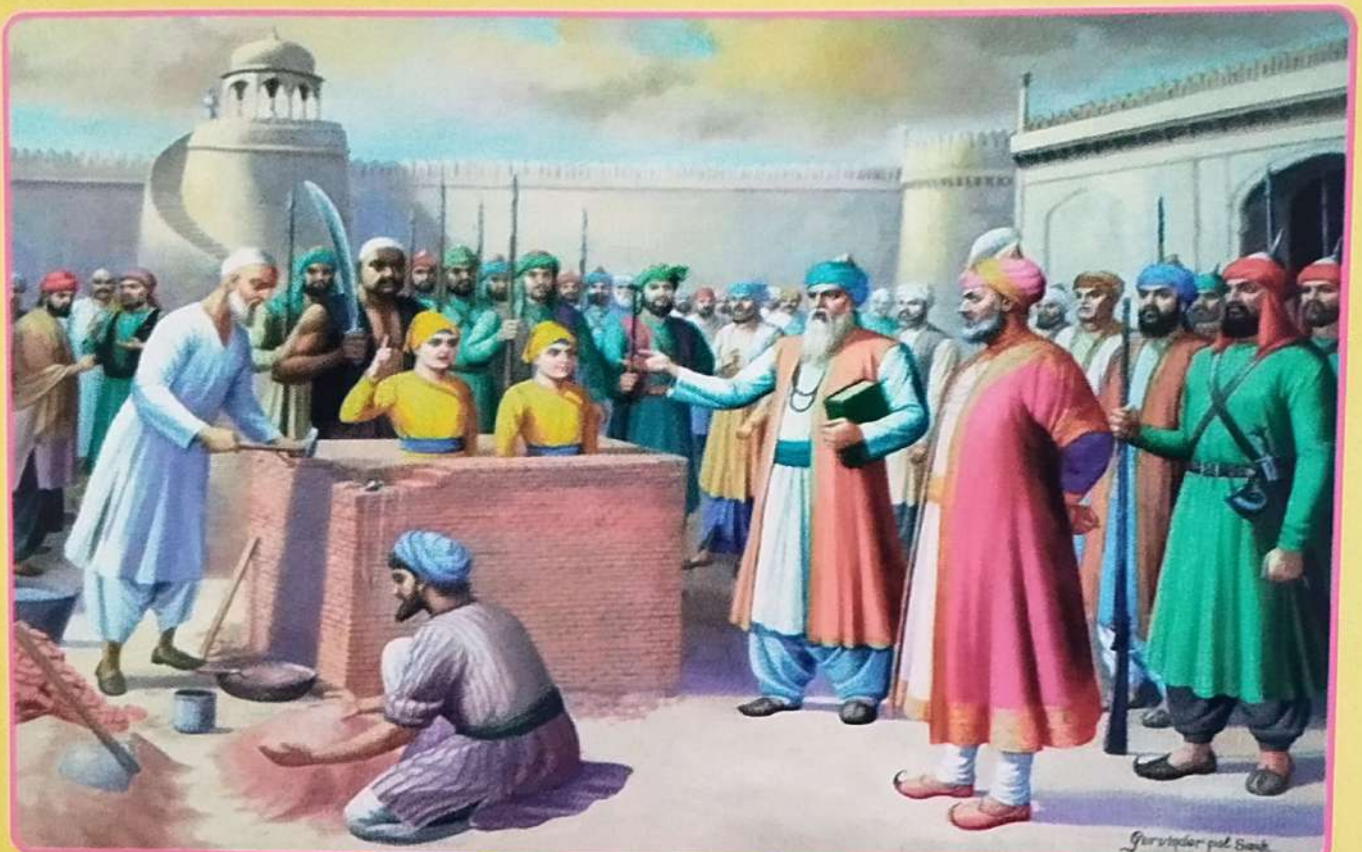
श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के चार साहिबज़ादे



ज़ियारत करो सिर झुकाओ आंसू बहाओ प्यार में।।
दो बच्चे ज़िंदा दफ़न हैं सरहिंद की दीवार में।।

लेखक

डॉ. परमवीर सिंघ

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के चार साहिबज़ादे

प्रथम संस्करण : 2022
प्रतियां : 1000
मुल्य : 20/-

प्रकाशक :
गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब मैनेजमेंट ट्रस्ट, उत्तराखंड

प्रिंटर : गुरुकृपा ट्रेडर्स, देहरादून

गुरु गोबिंद सिंघ जी के
चार साहिबज़ादे

साहिबज़ादा फ़ारसी भाषा का शब्द है जो बादशाह के सुपुत्र या राजकुमार के लिए उययोग किया जाता है। सिक्ख धर्म में यह शब्द गुरु साहिबान के सुपुत्रों को सत्कार सहित संबोधित करने के लिए उययोग किया जाता है अब प्रश्न यह पैदा होता है कि क्या सभी गुरु साहिबान के सुपुत्रों को साहिबज़ादे कहा जा सकता है? इसका जवाब है नहीं। जिन गुरु सुपुत्रों ने गुरु घर की मर्यादा तथा परंपरा का सम्मान नहीं किया उनको गुरु साहिबान ने खुद ही अपने से दूर कर दिया था। यह शब्द गुरु गोबिंद सिंघ जी के सुपुत्रों के साथ ऐसा रूढ़ हो गया है कि अब केवल उनको ही इस शब्द से संबोधित किया जाता है।

गुरु गोबिंद सिंघ जी के चार साहिबज़ादे थे– साहिबज़ादा अजीत सिंघ, साहिबज़ादा जुझार सिंघ, साहिबज़ादा जोरावर सिंघ तथा साहिबज़ादा फतेह सिंघ। इन चारों साहिबज़ादों ने अपने जीवन में इस तरह के कार्य किए कि इनको समय तथा स्थान में संकुचित करके नहीं देखा जा सकता। इनके साहसिक कार्य संसार के इतिहास में विशेष रूप से जाने जाते हैं जिन्होंने इनको अमर कर दिया है। साहिबज़ादों को धर्म में दृढ़ रहने की जो शिक्षा प्रदान की गई थी, सभी ने उसका दृढ़ता पूर्वक पालन किया। इन्होंने कभी किसी को शिक्षाप्रद शब्द नहीं बोले पर इन्होंने जो कार्य किए उनसे समुचित मानवीय समाज शिक्षा तथा प्रेरणा ग्रहण करता है। इसका भाव है कि इनके कार्य ही कथन का रूप धारण कर गए थे। व्यवहारिक जीवन की इस शिक्षा में बड़े साहिबज़ादों ने धर्म के लिए रणभूमि में जूझते हुए शहादत प्राप्त की तथा छोटे साहिबज़ादे ने धार्मिक दृढ़ता धारण करते हुए शहादत दे दी थी पर इन्होंने कभी भी जुल्म तथा ज़ालिम के आगे झुकना स्वीकार नहीं किया।

बड़े साहिबज़ादे

गुरु नानक देव जी ने एक संघर्षशील समाज की सृजना की थी। उनकी शिक्षायों का प्रचार एवं प्रसार करते हुए छठे गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने

हथियारबंद युद्ध की शुरुआत की थी जो दशम गुरु गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय प्रचंड रूप धारण कर गई थी। निश्चित रूप में गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय सिक्खों के मन में युद्धों के लिए जो प्रेरणा पैदा हुई थी उससे अभ्यास में तेजी आ गई थी। आधुनिक शस्त्र एकत्र किए जाने लगे, फौजी अभ्यास आरंभ हो गया, गतके की शिक्षा सिक्ख जीवन का महत्वपूर्ण अंग बन गई जो बाद में खालसाई शस्त्र विद्या का मूल आधार बनी। शारीरिक बल पैदा करने के लिए अखाड़े कायम किए गए, शिकार खेलने की रुचि तथा प्रेरणा पैदा की गई, नगाड़े को सिक्ख जीवन का अंग बनाकर शाही सैनिकों जैसी परंपराएं आरंभ की गई। ऐसे माहौल में साहिबज़ादे कैसे अलग रह सकते थे? साहिबज़ादों ने खुद भी इन जंगी अभ्यास के कार्यों में रुचि दिखाई जिसको सुचारू रूप से प्रफुल्लित करने के लिए गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कुछ माहिर उस्तादों को इस काम कि लिए नियुक्त किया। शमशेर सिंघ अशोक बताते हैं के साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी तथा बाबा जुझार सिंघ जी ने 13–14 साल की आयु से ही शस्त्र चलाने में महारत प्राप्त कर ली थी। धीरे–धीरे वह गुरु पिता जी के साथ युद्ध अभ्यास में सम्मलित होने लगे थे।

1687 में पांवटा साहिब में जन्मे साहिबज़ादा अजीत सिंघ आयु में सबसे बड़े थे। फौजी युद्ध अभ्यास करने के साथ–साथ वह आनंदपुर के आसपास होने वाली छोटी बड़ी लड़ाइओं में शामिल होने लगे थे। इस संबंध में एक घटना का विशेष रूप से उल्लेख मिलता है जब 1699 में पठोहार से आ रही संगत को नूह नामक गांव के रंगडों ने लूट लिया था। संगत ने आनंदपुर साहिब में आकर इस घटना की जानकारी गुरु गोबिंद सिंघ जी को दी तो उन्होंने अगले दिन अपने साहिबज़ादे अजीत सिंघ की अगुवाई में उदय सिंघ समेत 100 सिक्खों को लुटेरों को दंड देने के लिए भेजा। साहिबज़ादे की अगुवाई में सिक्खों द्वारा नूह गांव पर हमला करके वहाँ के चौधरी केशो राम रंगड़ को पकड़ कर आनंदपुर साहिब लाया गया तथा उस द्वारा अपनी गलती स्वीकार करने पर छोड़ दिया गया था। ऐसे ही एक और युद्ध में जब पहाड़ी राजाओं ने एक बार जमतुल्ला गुज्जर की सहायता से आनंदपुर पर हमला कर दिया था तब गुरु जी के सिक्खों ने उनका डटकर मुकाबला करते हुए जीत हासिल की तथा जमतुल्ला गुज्जर को मार दिया

गया। इस युद्ध में एक हिस्से की कमान साहिबज़ादा अजीत सिंघ के पास थी जिस में शामिल 4000 मलवई सिक्खों ने बहादुरी के जौहर दिखाए थे। इस तरह जंग युद्ध के अभ्यास से साहिबज़ादा अजीत सिंघ के मन में दुश्मन से लड़ने की दृढ़ता पैदा हो गई थी तथा उसके मन में एक जुझारू जरनैल के गुण विकसित होने लगे थे।

आनंदपुर साहिब में गुरबाणी का अध्ययन तथा शस्त्र विद्या का अभ्यास सिक्खों के जीवन का अंग बन गए थे। गुरबाणी का अध्ययन गुरमति की शिक्षा दृढ़ करवाता है तथा शस्त्र विद्या गुरमति की शिक्षा पर दृढ़ता पूर्वक पहरा देने की प्रेरणा पैदा करती है। युद्ध नीति का अभ्यास धार्मिक मूल्यों को दृढ़ कराने तथा उनको बचाने के लिए किया जाता है। *भय काहू को देत नहि नहि भय मानत आन* की शिक्षा को व्यहार में लाने की तैयारी हो रही थी। पूर्वजों द्वारा दिखांई निडरता तथा कुर्बानी की प्रेरणा खून में रमी हुई थी, उसको उजागर करने की जरूरत थी। साहिबज़ादे को ऐसी शिक्षा तथा प्रेरणा में दृढ़ कराने हेतु गुरबाणी अध्ययन तथा युद्ध अभ्यास करवाया जा रहा था। बाणी तथा बाणे की रक्षा के लिए दृढ़ करवाए जा रहे धर्म उद्देश्य को प्रथम मानते हुए साहिबज़ादा अजीत सिंघ पूर्व गुरु साहिबान की शिक्षा तथा सिद्धांत को जीवन में धारण कर रहे थे। विरासत में गुरु अर्जुन देव जी तथा गुरु तेग बहादर जी की शहादत तथा गुरु हरगोबिंद साहिब जी का मीरी पीरी का सिद्धांत इनका मार्ग दर्शन कर रहा था। दादी माता गुजरी जी द्वारा सुनाई जा रही साखियां मन में जुल्म के विरुद्ध खड़े होने तथा धर्म के मार्ग पर चलते हुए अपना जीवन कुर्बान करने की प्रेरणा पैदा कर रही थी। गुरु साहिबान की विरासत मन में प्रभु प्रति प्रेम तथा सदाचार की भावना पैदा कर रही थी तथा युद्ध के मैदान की शिक्षा एक शूरवीर वाले गुणों को विकसित करने में सहायक हो रही थी।

साहिबज़ादा अजीत सिंघ में ऐसे गुणों को विकसित होता देख गुरु गोबिंद सिंघ जी उसको नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए ज़ालिमों को दंडित करने के लिए भेजने लगे थे। आप लोगों में यह विश्वास दृढ़ हो रहा था कि समय की हुकूमत के ज़ालिम अधिकारियों से इंसाफ मिलने की कोई उम्मीद बाकी नहीं थी पर गुरु

घर में आने वाले फरियादियों को कभी निराशा नहीं होती थी। जब भी कोई ज़ालिम सरकारी अधिकारियों के खिलाफ शिकायत लेकर गुरु साहिब के पास आता तो गुरु जी उसको न्याय दिलाते थे। इसी तरह की एक और घटना में एक बार होशियारपुर के रहने वाले देवदास नामक सारस्वत ब्राह्मण ने गुरु जी के पास आकर फरियाद की कि वह अपनी शादी के बाद जब बस्सी गांव के पास से गुजर रहा था तो वहाँ का सरदार जाबर ख़ान पठान जबरदस्ती उसकी पत्नी की डोली छीन कर ले गया था। मैंने गांव के हाकिम तथा चौधरी के पास फरियाद की पर कोई सहायता नहीं मिली। अब मैं आप जी के पास सहायता हेतु विनती करने के लिए हाजिर हुआ हूं। जब गुरु जी ने उस ब्राह्मण की फरियाद सुनी तो अपने साहिबज़ादे अजीत सिंघ को 200 घुड़सवार देकर उसके साथ भेजा और कहा कि जाबर ख़ान समेत इस ब्राह्मण की स्त्री को मेरे पास ले आओ। अगर कोई मुकाबला करें तो शेर के गुणों को प्रकट करो। साहिबज़ादे ने अपने पिता गुरु जी की आज्ञा का पालन करते हुए सतलुज दरिया पार करके दिन चढ़ने से पहले ही उस सोए हुए पठान को जा दबोचा। कई पठान मारे गए, कुछ घायल हो गए और कुछ डरते हुए भाग गए। साहिबज़ादा अजीत सिंघ जाबर ख़ान को ब्राह्मण की पत्नी के साथ पकड़ कर आनंदपुर साहिब ले आया। इंसाफ पसंद गुरु जी ने ब्राह्मण की पत्नी को ब्राह्मण के साथ भेज दिया तथा जाबर ख़ान को तीरों से मरवा दिया। आनंदपुर साहिब में आरंभ हुई लड़ाइयों ने सिक्खों को सुचेत कर दिया था कि आने वाला समय संकट से भरा हुआ है। बेईमानी तथा जुल्म के राज में सच्चाई के मार्ग पर चलने वालों को अन्ततः यह मार्ग धारण करना पड़ता है। गुरु अर्जुन देव जी तथा गुरु तेग बहादर जी की शहादत के बाद सिक्खों में पैदा हुई उदासीनता को चढ़दीकला में बदलने के लिए गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की सृजना की थी जो कि जुल्म तथा जबर का मुकाबला करने के लिए प्रचंड संघर्ष की शुरुआत थी। इस संघर्ष में जहां गुरु साहिब ने सिक्खों की अगुवाई की थी वहीं अपने साहिबज़ादों में निर्भयता के ऐसे गुण उजागर कर दिए थे कि वह प्रशिक्षित जरनैलों की तरह रणभूमि में जूझने लगे थे। आनंदपुर के एक युद्ध में साहिबज़ादा अजीत सिंघ द्वारा की गई अगवाई का वर्णन करते हुए कवि सेनापति लिखता है :

तब ही बचन पाए चड़िहओ नगारा बजाए,
स्वार भयो जीत सिंघ युद्ध के करण को।
सिंघन को साथ लीए मुहरे निशान दीए,
बांधिओ है खड़ग सीस दूत के धरन को।

श्री गुरु शोभा, अध्याय 8.18

छोटी उम्र में ही साहिबज़ादा अजीत सिंघ द्वारा युद्धों में शामिल होने तथा शूरवीरता के जौहर दिखाने पर हर व्यक्ति तथा दुश्मन के जरनैल प्रभावित हो रहे थे। साहिबज़ादा इतनी बहादुरी तथा फुर्ती से जूझता हुआ रणभूमि में प्रवेश करता कि दुश्मन को पीछे हटने के लिए मजबूर कर देता। आनंदपुर साहिब के एक युद्ध का वर्णन करते हुए कवि सेनापति बताता है :

राजन की सुधि बुधि गई भयो जुध जब जोर।
लरत सिंघ रणजीत तह फउज दई सब मोर।

श्री गुरु शोभा, अध्याय 8.31

आनंदपुर साहिब छोड़ने के बाद परिवार बिछड़ जाने पर साहिबज़ादा अजीत सिंघ तथा साहिबज़ादा जुझार सिंघ समेत 40 सिक्ख गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ रह गए थे। माता सुंदरी तथा माता साहिब कौर भाई मनी सिंघ जी के साथ दिल्ली की तरफ चले गए तथा छोटे साहिबज़ादे और माता गुजरी जी किसी और तरफ चले गए थे। सरसा नदी के किनारे सारा परिवार बिछड़ गया था तथा मुगल सेना बहुत तेजी से गुरु गोबिंद सिंघ जी का पीछा कर रही थी। गुरु जी बहुत शीघ्रता के साथ अपने सिक्खों समेत आगे चमकौर साहिब तक पहुँच गए थे। चमकौर साहिब में गुरु जी को एक कच्ची गढ़ी का पता चला जिसका मालिक जगत सिंघ था जो कि आसपास के 65 गांवों का मालिक था। गुरु साहिब ने अपने कुछ सिक्ख उसके पास भेजें ताकि उस गढ़ी में निवास किया जा सके। उसने गुरु जी के सिक्खों को गढ़ी में निवास करने से मना कर दिया था परंतु उसका भाई रूप चंद, जो कि आधी गढ़ी का मालिक था, ने गुरु जी को गढ़ी में निवास करने की सहमति दे दी थी। इस गढ़ी के अंदर प्रवेश करने का केवल एक ही रास्ता था जिस कारण इसकी किलेबंदी करनी आसान हो गई थी।

सिक्खों ने गढ़ी की सुरक्षा के लिए तुरंत ही प्रबंध कर लिए थे जिसका वर्णन करते हुए सरूप सिंघ कोशिश बताते हैं कि गढ़ी के चारों तरफ 8–8 सिक्खों का पहरा लगा दिया था। भाई मदन सिंघ तथा भाई काठा सिंघ को मुख्य द्वार पर खड़ा कर दिया गया था। भाई धर्म सिंघ तथा भाई आलम सिंघ को सभी और निगरानी रखने के लिए नियुक्त किया गया। भाई दया सिंघ, भाई मोहकम सिंघ, भाई साहिब सिंघ, भाई हिम्मत सिंघ तथा दोनों साहिबज़ादे गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास थे। जब मुगल फौज के सिपाहियों ने गढ़ी पर हमला किया तो उनको जबरदस्त मुकाबले का सामना करना पड़ा। जिस को भी गुरु जी का तीर लगा वह इस संसार से विदा हो गया।

साहिबज़ादों ने कभी भी गुरु पुत्र होने का गर्व नहीं किया था और ना ही कभी गुरु जी ने उनको खालसा पंथ से अलग कर के देखने की कोशिश की थी। समूचे खालसा पंथ को भी गुरु जी अपना सुपुत्र मानते थे। साहिबज़ादे दूसरे सिक्खों की तरह अपने पिता गुरु जी के आदेश का पालन करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। चमकौर साहिब में दुश्मन को सख्त मुकाबले का सामना करना पड़ा और वह पीछे हटने को मजबूर हो गए थे। मुगल सेना का जो भी सिपाही या फौजदार गढ़ी के नजदीक आने का साहस करता तो जिंदा वापस नहीं जा सकता था।

चमकौर के युद्ध की रणनीति इस तरह से तैयार की गई थी कि अपने कम से कम नुकसान के साथ ज्यादा समय तक दुश्मन का मुकाबला किया जा सके। गढ़ी के मुख्य द्वार से पाँच–पाँच सिक्ख निकलते तथा दुश्मन के साथ लड़ते हुए शहीद हो जाते थे। गढ़ी के अंदर से बाहर आकर लड़ने वाले योद्धाओं तथा मुगल फौज के सिपाहियों में बड़ा अंतर यह था कि सिक्ख अपने धर्म तथा गुरु जी के लिए बिना किसी स्वार्थ से युद्ध कर रहे थे तथा मुगल फौज के सिपाही अपनी तनख्वाह तथा ईनाम हासिल करने हेतु सिक्खों से युद्ध कर रहे थे। मन में मौत का भय ना होने के कारण गुरु जी के सिक्ख जिस तरफ भी युद्ध करते वह दुश्मन के सिपाहियों को पीछे हटने के लिए मजबूर कर देते थे। वह मुगल सिपाहियों को मार कर खुद भी शहीद हो जाते थे जिस से दुश्मन के मनोबल पर

भारी असर पड़ रहा था। बेशक सिक्ख गिनती में बहुत कम थे पर वे यह मानते थे कि गुरु जी इस जीवन में तथा अगले जीवन में भी हमेशा उनके साथ है। इसलिए मृत्यु का जरा सा भी भय उनके मन में मौजूद नहीं था। चढ़दीकला मे रह कर सिक्ख दुश्मन का मुकाबला कर रहे थे और ऐसी ही दशा साहिबज़ादों की भी थी। आनंदपुर में जबर तथा जुल्म के साथ लड़ने की जो प्रेरणा प्राप्त हुई थी उस पर चलते हुए सिक्ख निरंतर युद्ध कर रहे थे। इसी दृढ़ता तथा निष्ठा के साथ पाँच–पाँच सिक्ख गढ़ी से बाहर निकलते तथा दुश्मन से लड़ते हुए शहीद हो जाते थे। सिक्ख योद्धाओं ने मुगल सैनिकों के मन में इतना भय पैदा कर दिया था के लाखों की गिनती में होने के बावजूद भी वह इतना साहस नहीं कर पा रहे थे के गढ़ी के नजदीक आ सकें। मुगल फौजदार जो भी योजना बनाते थे वह विफल हो रही थी। उनके लिए इस गढ़ी को जीतना दांतो से लोहा चबाने वाली बात साबित हो रही थी। मुगल फौज के जो सरदार या सिपाही बाहर से गढ़ी में घुसने की कोशिश करते उनको गढ़ी के ऊपर बैठे सिक्खों के क्रोध का शिकार होना पड़ रहा था जिसका जिक्र गुरु गोबिंद सिंघ जी अपनी रचना *ज़फ़रनामा* में भी करते हैं। गुरु जी केवल मुगल योद्धाओं का वर्णन करते हैं जिन्होंने गढ़ी के नजदीक आने या सीढी से अंदर घुसने की कोशिश की तथा उन्हें गुरु जी के हाथों ही मौत प्राप्त हुई थी। इनमें मलेरकोटला से आई हुई फौज का जरनैल नाहर ख़ान भी मौजूद था जो कि तीर कमान लेकर गुरु जी के ऊपर हमले की नीयत से आगे बढ़ा तथा जिसे गुरु जी ने अपने तीर का निशाना बना दिया था। बादशाही फौज के साथ आए इस जरनैल की मौत का जिक्र करते हुए गुरु जी कहते हैं :

चु दीदम कि नाहर बिआमद ब–जंग
चशीदह यके तीरि मन बेदरंग। *ज़फ़रनामा,* शिअर 29

इसके अलावा गुरु जी उस जरनैल का भी जिक्र करते हैं जो गढ़ी के पीछे छुप गया पर लड़ने के लिए सामने नहीं आयाः

कि आं ख़्वाजह मरदूद सायह दीवार
ब–मैदां नयामद ब–मरदानह वार। *ज़फ़रनामा,* शिअर 34

इससे स्पष्ट होता है कि भारी मुगल फौज गुरु जी के शूरवीर सिक्खों के सामने आने से डर रही थी। इस युद्ध में कितने मुगल सैनिक मारे गए उनका जिक्र नहीं मिलता पर इतना कहा गया है कि रणभूमि में योद्धाओं के शव गेंद (सिर) तथा छड़ियों (टांगो, बाजुओं) के समान बिखरे पड़े थे।

सरो पाइ अंबोह चंदा शुदह।

कि मैदां पुर अज़ गइओ चौगां शुदह। *ज़फ़रनामा,* शिअर 38

गुरु जी ने जिस भी मुगल फौजदार सिपाही को तीर का निशाना बनाया वह फिर इस धरती का निवासी नहीं रहा तथा उसके साथ आए हुए सिपाही पीछे भाग गए। बेशक गुरु जी के सिक्ख अपनी जान हथेली पर रखकर युद्ध कर रहे थे तथा शहीद हो रहे थे पर गिनती में कम होने की वजह से वह कब तक लड़ सकते थे। जो भी पाँच सिक्ख गढ़ी से बाहर जाते वह शहीद हो जाते थे इस तरह गढ़ी के अंदर बहुत कम सिक्ख बचे थे। युद्ध में शहीद होने वाले सिक्ख शूरवीर बचे हुए सिक्खों के मन को युद्ध के लिए प्रेरित कर रहे थे। साहिबज़ादा अजीत सिंघ भी युद्ध में जाने के लिए व्याकुल हो रहा था। उसके अंदर छुपा हुआ शौर्य दुश्मन से लोहा लेने के लिए उत्तेजित हो रहा था। दोपहर का समय था जब साहिबज़ादा अजीत सिंघ ने गुरु गोबिंद सिंघ जी से युद्ध में जाने की आज्ञा मांगी। कोयर सिंघ बताता है कि गुरु जी ने साहिबज़ादे को जंग में जाने के लिए प्रेरित करते हुए कहा :

हे सुत तुम हम को हो प्यारे।
तुरक नास हित तुम तन धारे।
जे अपने सिर रन मैं लागे।
ता कर नास मलेछ सुभागे।
ता ते या सम समा न कोई।
तुम दोनहु संघर भल जोई।

गुरबिलास पातशाही 10, पन्ना 202

गुरु जी के शब्दों ने साहिबज़ादे के मन में भरपूर जोश पैदा कर दिया था। सिक्खों की कुर्बानियों तथा कम हो रही गिनती को ध्यान में रखते हुए सबसे पहले

साहिबज़ादा अजीत सिंघ ने गढ़ी के बाहर युद्ध में जाने के लिए पिता जी से अनुमति मांगी जिसका वर्णन करते हुए कवि सेनापति कहता हैः

बिनउ करी करि जोरि कै खुशी करउ करतार।
करउ बीर संग्राम मै देखउ आपि निहारि।

श्री गुरु शोभा, अध्याय 12.29

गुरु गोबिंद सिंघ जी से आशीर्वाद प्राप्त करके साहिबज़ादा अजीत सिंघ अपने साथी सिक्खों के साथ रणभूमि में आ गए। यह एक बेजोड़ युद्ध था जिसमें धर्म का जोश बड़ी गिनती में आए दुश्मन से लोहा ले रहा था। गढ़ी के ऊपर से गुरु गोबिंद सिंघ जी तथा रणभुमी में खड़े वजीर ख़ान तथा जबरदस्त ख़ान इस युद्ध को देख रहे थे। साहिबज़ादे ने गढ़ी के बाहर आते ही एक जबरदस्त हमला किया जिससे दुश्मन को पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा। जंग के मैदान में सिक्खों का जोश देखकर मुगल फौज भी हैरान हो रही थी। तेजी से हमला करना तथा तुरंत ही अपना पासा पलट कर दुश्मन पर हमला करने वाली महारत से साहिबज़ादे ने दुश्मनों को सख्त मुकाबले के लिए विवश कर दिया था जिसकी कल्पना दुश्मन फौज के सिपाहियों तथा जरनैलों की तरफ से नहीं की गई थी। तुरंत ही दुश्मन पर वार करने की महारत जहां बड़े–बड़े मुगल फौजदारों को प्रभावित कर रही थी वहीं आगे होकर लड़ रही फौज में बेचैनी भी पैदा कर रही थी। मुगल फौज के सिपाहियों ने भी तेजी से साहिबज़ादे तथा उसके साथ आए सिक्खों को अपने घेरे में ले लिया जिससे युद्ध में और भी तेजी दिखाई दे रही थी। साहिबज़ादे के ऊपर चारों तरफ से हमला हो रहा था तथा वह भी दुश्मन का सख्त मुकाबला कर रहे थे। इस तरह दुश्मन के कई सिपाहियों को मौत के घाट उतारकर साहिबज़ादा अजीत सिंघ भी शहीदी प्राप्त कर गए थे। ताजा दम फौज के साथ भूखे रह कर सिक्खों तथा साहिबज़ादा अजीत सिंघ का युद्ध करना इतिहास के पन्नों में दर्ज है। गुरु गोबिंद सिंघ जी गढ़ी के ऊपर से इस युद्ध को देख रहे थे और जब उन्होंने अपने साहिबज़ादे को बहादुरी से लड़ते हुए तथा शहीदी प्राप्त करते हुए देखा तो मन में कोई शोक प्रकट नहीं किया। गुरु जी के मनोभाव को प्रकट करते हुए जोगी अल्लाह यार ख़ान लिखता है :

शहज़ादः– ऐ–जी–जाह ने भागड़ सी मचा दी।
यिह फौज भगा दी, कभी उह फौज भगा दी।
बड़्ह चड़्ह के तवकुअ से शुजाअत जु दिखा दी।
सतिगुर ने वहीं किलाअ से बेटे को निदा दी ।
शाबाश पिसर खूब दलेरी से लड़े हो।
हां, कयों न हो गोबिंद के फ़रज़ंद बड़े हो।

गंजि शहीदां, 94

साहिबज़ादा अजीत सिंघ को शहीद होता देख उनका छोटा भाई साहिबज़ादा जुझार सिंघ भी दुश्मन से युद्ध करने के लिए उत्सुक हो रहा था। उसने भी पिता गुरु जी से युद्ध में जाने के लिए आज्ञा मांगी। अपने बड़े साहिबज़ादे के बिछड़ जाने से गुरु जी के मन में पल भर के लिए भी अपने दूसरे बेटे जुझार सिंघ के लिए मोह पैदा नहीं हुआ बल्कि उसको युद्ध में जाने की आज्ञा देते हुए गुरु जी ने कहा कि बेटा हमारे पूर्वजों ने धर्म के मार्ग पर चलते हुए अकाल पुरख की कृपा दृष्टि प्राप्त की है। तुम्हारा बड़ा भाई साहिबज़ादा अजीत सिंघ अपने पूर्वजों की गोद में चला गया है तथा हम भी शीघ्र ही उनके पास पहुँच जाएंगे। गुरु जी से आशीर्वाद प्राप्त करके साहिबज़ादा जुझार सिंघ युद्ध के मैदान में आ गया। 15 साल की आयु में यह कम उम्र का नौजवान किसी बड़े जरनैल की भांति युद्ध के दांव पेंच नहीं जानता था पर उसके समक्ष अपने बड़े भाई की शहीदी तथा गुरु गोबिंद सिंघ जी का आशीर्वाद ही दुश्मन से युद्ध करने के लिए काफी था। साहिबज़ादा जुझार सिंघ धर्म के जोश से मुगल फौज से टक्कर लेने आ गया था। साहिबज़ादे ने अपने साथ आए सिक्खों के साथ दुश्मन के कई सिपाही मार दिए थे तथा कई निपुण मुगल जरनैलों को हैरान कर दिया था। शायद वह यह नहीं जानते थे कि एक कम उम्र का नौजवान उनका सामना कर पाएगा या उनसे लड़ने के लिए रणभूमि में आ जाएगा। साहिबज़ादा पूरी फुर्ती तथा दिलेरी से दुश्मन से मुकाबला कर रहा था और अपने से बड़े निपुण मुगल सिपाहियों के साथ युद्ध कर रहा था। कई मुगल सैनिकों को मार कर साहिबज़ादा जुझार सिंघ भी शहीद हो गए थे। उनकी बहादुरी तथा शहादत का वर्णन करते हुए भाई रतन सिंघ भंगू लिखते हैं :

कई तुरकन मार तिह श्री जुझार सिंघ शहीदी लीन।

श्री गुर पंथ प्रकाश, पन्ना 95.

गुरु गोबिंद सिंघ जी के दोनों पुत्र तथा कई और सिक्ख जंग के मैदान में शहीद हो चुके थे। जो शेष बचे थे वह भी शहीदी प्राप्त करने के लिए तैयार थे। इस तरह लड़ते लड़ते शाम हो गई थी तथा युद्ध विराम हो गया पर मुगल सिपाही गढ़ी के चारों तरफ डेरा डाल कर अगले दिन के युद्ध का इंतजार करने लगे थे। ना कोई गढ़ी से बाहर आ सकता था और ना ही कोई अंदर जाने की हिम्मत कर सकता था। रात को भीषण ठंड होने के बावजूद भी मुगल फौज गढ़ी के चारों तरफ डेरा डाले हुए थी। अंदर बचे हुए सिक्खों ने एक गुरमता करके गुरु गोबिंद सिंघ जी को गढ़ी छोड़ जाने का आदेश कर दिया था। रात के समय गुरु गोबिंद सिंघ जी के अतिरिक्त तीन और सिक्ख गढ़ी छोड़ कर चले गए थे। नीति के अनुसार उन सभी को अलग–अलग दिशा में जाने तथा आगे चल कर मिलने को कहा गया। गढ़ी में बचे सिक्खों में से एक को गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी पोशाक तथा कलगी पहना दी थी ताकि मुगल सिपाहियों को यह भ्रम बना रहे कि गुरु गोबिंद सिंघ जी गढ़ी के भीतर ही मौजूद है। अगले दिन प्रातः जब मुगल फौज ने गढ़ी के ऊपर फिर से आक्रमण किया तो वे गढ़ी के अंदर पहुँच गए थे बचे हुए दोनों सिक्ख भी मुकाबला करते हुए शहीदी प्राप्त कर गए थे।

छोटे साहिबज़ादे

आनंदपुर साहिब छोड़ने के बाद सरसा नदी पार करते समय गुरु गोबिंद सिंघ का परिवार बिछड़ गया था। माता गुजरी जी और छोटे साहिबज़ादे गुरु घर के रसोइया गंगू ब्राह्मण को मिल गए थे जिन्हें वह अपने गांव सहेडी ले आया था। गांव पहुँचने पर उसके मन में लालच आ गया था। उसने माता जी की मोहरों वाली थैली चुरा ली थी। माता जी के पूछने पर एतराज करते हुए वह मोरिंडा के हाकिम जानी ख़ान तथा मानी ख़ान के पास गया तथा उन्हें सूचना दी कि गुरु जी की माता जी तथा दोनों साहिबज़ादे उसके घर पर हैं। पुरस्कार प्राप्त करने के लिए उसने गुरु जी के परिवार को पकड़वा दिया था। माता गुजरी जी तथा साहिबज़ादों को गिरफ्तार कर के सरहिंद के नवाब वज़ीर ख़ान के पास भेजने का

प्रबंध किया जाने लगा। उस समय आने–जाने के साधन बहुत कम थे तथा माता जी और साहिबज़ादों को सहेडी से सरहिंद लाने में परेशानी हो रही थी, इसलिए गुरु–परिवार की सुविधा को ध्यान में रखते हुए संत बाबा अजीत सिंघ नथमलपुर के बुजुर्गों ने एक रथ तैयार किया, जिस पर माता जी तथा साहिबज़ादे मोरिंडा पहुँचे और वहाँ से उनको सरहिंद की तरफ रवाना किया गया। माता गुजरी तथा साहिबज़ादों को रथ पर बैठाकर सरहिंद ले जाने की घटना का वर्णन करते हुए केसर सिंघ छिब्बर बताते हैं:

दुए साहिबजादे निकड़े नालि गए।
रथ विचि नालि दादी के सुते पए।
सो रथ रंघडां तुरकां नुं हथि आईया।
उनां तुरकां रंघडां लुट पुट के रथ सीरंद पकड़ पठाइया।

बंसावलीनामा, अध्याय 10.557

जिस स्थान से रथ माता जी तथा साहिबज़ादों को लेकर चला था वहाँ गुरुद्वारा रथ साहिब सुशोभित है। सरहिंद पहुँचते ही उन्हें एक ठण्डे बुर्ज में कैद कर सुच्चा नंद को सौंप दिया गया। वज़ीर ख़ान के लिए यह एक बड़ी खुशखबरी थी, जिसे सुनकर वह बेहद प्रसन्न हुआ, क्योंकि गुरु साहिब के बच निकलने से चमकौर की लड़ाई में उसको निराशा हाथ लगी थी।

साहिबज़ादों को नवाब वज़ीर ख़ान के दरबार में पेश किया गया। यहां यह बात विचारणीय है कि नवाब के सामने साहिबज़ादों को ही क्यों पेश किया गया? किसी भी ऐतिहासिक स्रोत से यह बात सामने नहीं आई है कि माता गुजरी जी को भी कभी नवाब के सामने पेश किया गया हो। लगता है नवाब को यह बात समझ में आ गयी थी कि माता जी गुरबाणी अभ्यास, गुरमति परंपरा तथा संस्कारों में पूरी तरह से दृढ़ हैं और वह सूक्ष्म से सूक्ष्म बात को समझने और समझाने में सक्षम हैं, उन्हें इस्लाम धर्म में लेकर आना संभव नहीं है। दूसरी ओर, साहिबज़ादे छोटे होने के कारण नए विचारों को ग्रहण करने में अभी भी सक्षम हैं और अगर वे डर या प्रलोभन से इस्लाम की ओर आकर्षित हुए, तो सफलता हाथ लग सकती है। मुस्लिम शासक को यह बात शायद ज्यादा प्रेरित करती थी कि किसी

को मारने की बजाए उसे इस्लाम धर्म में परिवर्तित करना एक बड़ी सफलता है। इसी तरह का प्रयास दिल्ली के शासक ने पहले गुरु तेग बहादुर साहिब के साथ किया था। जोगी अल्लाह यार ख़ान माता गुजरी जी की मनःस्थिति का उल्लेख करते हुए लिखते हैं:

जाने से पहले आओ गले से लगा तो लूं
केसों को कंघी कर दूं जरा मुँह धुला तो लूं
प्यारे सरों पै नन्ही सी कलगी सजा तो लूं
मरने से पहले तुम को दूल्हा बना तो लूं
रो रो के माता गुजरी ने आरातसा किया
तीरों कमां से तेरा पैरासता किया

शहीदानि वफ़ा, बंद 72

वज़ीर ख़ान के दरबार में पेश करने से पहले साहिबज़ादों को झुकाने तथा उनका मन बदलने के अनेक प्रयास किए गए थे। जैसे कचहरी में पेश होने से पूर्व सारे दरवाजे बंद कर दिए गए थे ताकि साहिबज़ादे झुक कर अंदर प्रवेश करें। लेकिन साहिबज़ादों ने पहले अपने पैर और फिर अपना सिर दरवाजे के अंदर किया। इस प्रकार साहिबज़ादों को झुकाने का यह तरीका असफल रहा। दरबार के अंदर साहिबज़ादों को तरह–तरह के प्रलोभन दिए गए, लेकिन उन्होंने हर सवाल का जवाब दृढता, शांत मन और निडरता के साथ इस तरह दिया कि सुनने वाले चकित रह गए। एक बार नवाब के दरबार में छोटे साहिबज़ादों को सांसारिक सुख–सुविधाओं का लालच दिया गया तो साहिबज़ादों ने जवाब दिया कि सांसारिक वस्तुएं मनुष्य को भौतिक सुखों तक सीमित करती हैं। दादी जी ने हमें निम्न स्तर का जीवन जीने की अपेक्षा उच्चतम आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दी है।

साहिबज़ादों को प्रतिदिन नवाब के दरबार में पेश किया जाता था। नवाब की कचहरी में पेश होने से पूर्व माता गुजरी जी उन्हें धर्म में दृढ़ रहने की शिक्षा देती थीं। गुरु अर्जन देव जी तथा गुरु तेग बहादुर जी की शहादत के प्रति माता जी द्वारा पैदा की गई चेतना ने साहिबज़ादों को सिक्खी के प्रति दृढ़ रहने के लिए परिपक्व कर दिया। माता जी साहिबज़ादों को सदैव यह शिक्षा देते थे कि

परमात्मा सदा अंग संग है। अकाल पुरख का सिमरन करने से उनके मन में परमात्मा जैसे गुणों का संचार हो गया था जैसे *निरभउ जपै सगल भउ मिटै*। सर्दी के मौसम में ठंड से बचने का अन्य कोई विकल्प उनके पास नहीं था, सिवाय इसके कि माता गुजरी जी साहिबज़ादों को अपनी गोद में लेकर उनको अपने पूर्वजों की साखियां सुनाती तथा उनको धर्म के मार्ग पर दृढ़ रहने का निरंतर उपदेश दे कर प्रेरित करती थीं। माता गुजरी जी तथा साहिबज़ादों को अकाल पुरख के भरोसे ही सर्दी के मौसम में रात को भूखे रह कर ही समय गुजारना पड़ रहा था।

माता जी और साहिबज़ादों को भूखा देखकर मोती राम महिरा का मन बेचैन हो रहा था। सरहिंद के सिपाही नवाब वज़ीर ख़ान के समय वह रसोई में हिंदू कैदियों को भोजन परोसने का काम करता था। इसके मन में गुरु साहिबान के प्रति अपार श्रद्धा थी तथा सरहिंद से गुजरने वाले सिक्खों को वह भोजन भी कराया करता था। जब माता गुजरी जी तथा साहिबज़ादों को सहेड़ी से सरहिंद लाकर ठण्डे बुर्ज में कैद कर दिया गया तो इसे आदेश किया गया कि उन्हें भी भोजन कराया जाए। जब वह भोजन लेकर माता जी के पास गया तो उन्होंने ज़ालिमों द्वारा भेजा गया भोजन ग्रहण करने से मना कर दिया। घर वापस आकर वह बेचैन हो गया। उससे माता जी तथा साहिबज़ादों का भूखे रहना बर्दाश्त नहीं हो रहा था। भीषण सर्दी के मौसम में गर्म दूध लेकर वह ठण्डे बुर्ज पर चला गया तथा पहरे पर खड़े हकूमत के सिपाहियों को अपनी पत्नी के गहने देकर माता जी तथा साहिबज़ादों के पास पहुँच गया। माता जी ने मोती राम से पूछा कि आप हमारे लिए दूध लाए हो, क्या आपको वज़ीर ख़ान से डर नहीं लगता? मोती राम ने कहा कि गुरु जी का बताया धर्म का मार्ग भय मुक्त करता है। माता जी ने उन्हें धर्म के मार्ग पर जीवन जीने का आशीर्वाद देते हुये उससे दूध ले लिया तथा साहिबज़ादों को पिलाया। माता जी तीन दिन तक वजीर खाँ के कारागार में रहीं और वे प्रतिदिन उनके लिए दूध लेकर आता रहा। नवाब वजीर खां को जब इसकी सूचना मिली तो उसने मोती राम महिरा को उसके परिवार सहित कोल्हू में कुचल कर मार डाला। गुरुद्वारा फतेहगढ़ साहिब से लगभग आधा किलोमीटर की दूरी पर उनकी याद में एक गुरुधाम है जो उनकी सेवा के बदले में मिली शहादत की याद दिलाता है।

मलेरकोटले का नवाब शेर मुहम्मद ख़ान चमकौर के युद्ध से लौटते समय नवाब वज़ीर ख़ान के साथ सरहिंद आ गया था। नवाब मलेरकोटला का भाई नाहर ख़ान तथा भतीजा खिजर ख़ान गुरु जी के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया था। छोटे साहिबज़ादों को नवाब वज़ीर ख़ान के दरबार में पेश किया गया तथा उन के साथ सवाल जवाब किए गए। साहिबज़ादे सरहिंद के नवाब के हर सवाल का जवाब पूरी दृढ़ता और निडरता के साथ दे रहे थे। नवाब वज़ीर ख़ान ने साहिबज़ादों को झुकता ना देख शेर मुहम्मद ख़ान को अपने भाई तथा भतीजे की मौत का बदला लेने के लिए उकसाया, लेकिन नवाब मलेरकोटला ने शीर खोर (दूध पीते) बच्चों को मारने से स्पष्ट इन्कार कर दिया क्योंकि वह इसे एक अन्यायपूर्ण कृत्य मानते थे। रतन सिंघ भंगू लिखते हैं कि नवाब मलेरकोटला ने सरहिंद के नवाब को उत्तर देते हुए कहा :

शेर मुहम्मद नहि गनी बोल्यो सीस हिलाई।
हम मारैं शीर खोरियां जग मैं औजस आए।

श्री गुरु पंथ प्रकाश, पन्ना 104.

शेर मुहम्मद ख़ान के शब्दों का विस्तार करते हुए, जोगी अल्लाह यार ख़ान लिखते हैं :

बदला ही लेना होगा तो हम लेंगे बाप से।
महिफूज रखे हम को ऐसे पाप से।

शहीदानि वफ़ा, बंद 104.

मलेरकोटले के नवाब शेर मुहम्मद ख़ान ने नवाब वज़ीर ख़ान को बार–बार समझाने की कोशिश की कि वह दूध पीते बच्चों को शहीद न करे। नवाब मलेरकोटला ने साहेबज़ादों की शहादत के खिलाफ जो आवाज बुलंद की इतिहास में उसे 'हाअ दा नाअरा' कहा जाता है। उनके द्वारा दिखाई गई विनम्रता और करुणा को सिक्खों द्वारा हमेशा याद किया जाता है और मलेरकोटला में मौजूद 'गुरुद्वारा हाअ दा नाअरा' इस घटना की याद दिलाता है।

साहिबज़ादों को झुकता न देख वज़ीर ख़ान शर्मिंदा हो रहा था। उन्हें झुकाने तथा इस्लाम के दायरे में लाने की हर संभव कोशिश की जा रही थी। एक

बार साहिबज़ादों को यहां तक कह दिया गया कि उनके पिता को चमकौर में मार दिया गया है और अब वे अकेले रह गए हैं :

तुमरो पिता मधि चमकौर।
मार लयो गढ़ मधि तित ठौर।
सीस काट तन अस साथा।
दिली गयो साहि के हाथा।

सुखा सिंघ, *गुरबिलास पातशाही 10,*
अध्याय 21.264;

साहिबजादियो पिता तुहारा।
गढ़ चमकौर घेर गहि मारा।।21।

भाई संतोख सिंघ, *श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ,*
रितु 6, अध्याय 51, पन्ना 5950.

यह बच्चों का मनोबल गिराने तथा उनको मानसिक पीड़ा पहुँचाने का एक प्रयास था, जो उन्हें उनके उद्देश्य से हिला नहीं सका। सुखा सिंघ कहता है कि साहिबज़ादों ने दृढ़ता से उत्तर दिया कि हमारे पिता को कोई मार नहीं सकता :

पवन रूप हमरो बर बाप।
सकत कौन ता को कर घात।

गुरबिलास पतशाही 10, अध्याय 21.285;

भाई संतोख सिंघ कहता है :

श्री सतगुर जो पिता हमारा।
जग महिं कौन सकहि तिह मारा।

श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ,
रितु 6, अंसू 51, पन्ना 5951.

जब साहिबज़ादों को बार–बार इस्लाम में परिवर्तित होने के लिए कहा गया, तो उन्होंने इस बात से स्पष्ट इन्कार करते हुए अपने पूर्वजों द्वारा बताए गए धर्म के मार्ग का वर्णन करते हुए कहा :

हमरे बंस रीति इम आई।
सीस देति पर धर्म नहीं जाई।

भाई संतोख सिंघ, *श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ,*
रितु 6, अध्याय 51, पन्ना 5952.

जब उसकी कोई भी चाल सफल न हुई तो उसने काजी से बच्चों को शहीद करने का फ़तवा मांगा, लेकिन काजी ने यह कहकर फ़तवा देने से मना कर दिया कि बच्चों को मारना इस्लाम में सही नहीं है। सुच्चा नंद ने पास खड़े होकर कहा कि ये साँप के बच्चे हैं, इन्हें यहीं कुचल देना चाहिए। जिस काम के लिए शेर मुहम्मद ख़ान ने जवाब दे दिया था, काजी ने मना कर दिया था, सुच्चा नंद ने उसे अंजाम देने की कोशिश की, जिसमें वह सफल रहा। सुच्चा नंद के उकसाने पर नवाब बच्चों से पूछने लगा कि अगर हम तुम्हें आजाद कर दें तो तुम क्या करोगे? साहिबज़ादों ने जवाब दिया कि हम सिक्खों को फिर से संगठित करेंगे तथा आप जैसे ज़ालिमों के खिलाफ युद्ध करेंगे। नवाब ने फिर पूछा कि अगर आप युद्ध में हार गए तो आप क्या करेंगे? गुरु जी के पुत्रों ने फिर जवाब दिया कि हम फिर से सेना एकत्र करेंगे, युद्ध की तैयारी करेंगे और या तो तुम्हें मार देंगें या स्वयं शहीद हो जायेंगे। साहिबज़ादों के मन में यह माता गुजरी जी द्वारा दिए गए उत्साह, निडरता और साहस की अभिव्यक्ति थी जिसने मुगल शासकों को हैरान तथा परेशान कर दिया था।

सुच्चा नंद अपनी चाल में सफल रहा। नवाब वज़ीर ख़ान ने बच्चों के खिलाफ मौत का फ़तवा काजी से यह कहकर प्राप्त कर लिया कि यह शीर खोर बच्चे हुकूमत के बागी हैं तथा इनके लिए मृत्युदंड उचित है।

नवाब वज़ीर ख़ान ने काजी से हासिल किए फ़तवे के अनुसार बच्चों को जिंदा दीवार में चिनवा देने का हुकुम जारी कर दिया। जब बच्चों को दीवार में चिनवा देने की प्रक्रिया शुरू हुई तो कहा जाता है कि जब बच्चों की कमर तक दीवार आ गई तो उन्हें बार–बार कहा गया कि अगर वे इस्लाम कबूल कर लें तो उनकी जान बच सकती है, बच्चों ने अपने दादा गुरु तेग बहादुर जी की तरह धर्म परिवर्तन करने से इन्कार कर दिया और गुरु नानक देव जी द्वारा दिखाए गए

सम्मान और स्वाभिमान के मार्ग पर चलते हुए मृत्यु को स्वीकार करने के इरादे से काजी की पेशकश को अस्वीकार कर दिया। जब दीवार बच्चों के गले तक पहुंची तो वे बेहोश होकर गिर पड़े।

कहा जाता है कि जब साहिबज़ादे बेहोश होकर गिर पड़े तो उन्हें शहीद करने का आदेश जारी कर दिया गया, जिसका उल्लेख इतिहास के विभिन्न ग्रंथों में मिलता है :

दुंना सिंघ हंडूरिया

जब कटार सों सीस ऊतारी।
चलयौ दूध तब दुष्ट पुकारे।

कथा गुरु जी के सुतन की, बंद 84

सुखा सिंघ

दोऊ सिसन के सीस उतारी।
दए काट उन अधम गवारी।

गुरबिलास पातशाही 10, अध्याय 21.274;

केसर सिंघ छिब्बर

जोरावर सिंघ दे प्रान खंडे नालि बेग छुट गए।
अधी घड़ी फते सिंघ जी चरन मारदे भए।

बंसावलीनामा, अध्याय 10.581;

रतन सिंघ भंगू

हुतो उहां थो छुरा एक वारो
दै गोडे हेठ कर जिबह डारो।
तड़फ तड़फ गई जिंद उड़ाए
इम शीर खोर दुये दए कतलाए।

श्री गुरु पंथ प्रकाश, पन्ना 104;

ज्ञानी ज्ञान सिंघ

दोष अदोश न जरा विचारो।
कतल करावो बिना अवारो।

मान बजीदे कहयो जलादन।
मारो गरदन इनि गुरु ज़ादन।।
    सय्यद हुते समाणे केरे।
    गहे कतल हित उनि बिन देरे।
तब गुरु सुत निज शक्ति संगैं।
गए तयाग त्रिन जयों निज अंगैं।। *पंथ प्रकाश,* अध्याय 66.70–71

साहिबज़ादों को शहीद करने का काम समाना के दो जल्लादों शाशल बेग और बाशल बेग ने किया था, जो किसी मुकद्दमे की तारीख भुगतने के लिए सरहिंद आए हुये थे। साहिबज़ादों को शहीद करने के लिए वे इस बात पर सहमत हो गये कि उनके सभी अपराध क्षमा कर दिए जाएंगे। वज़ीर ख़ान के आदेश के बाद उन्होंने दोनों साहिबज़ादों को शहीद कर दिया था। माता गुजरी जी को जब इस घटना का पता चला तो वे भी अकाल चलाना कर गई थीं। छोटे साहिबज़ादों की शहादत को इतिहास में 'निक्कियां जिंदां वडे साके' के नाम से याद किया जाता है और जिस शहर में वे शहीद हुए उसे 'गुरु–मारी सरहिंद' कहा जाने लगा था। सरहिंद में उठी सच्चे धर्म की आवाज की ज्वाला को कवियों ने अपनी शैली में लिखा है। महेंद्र सिंघ मानूपुरी की ये पंक्तियां सरहिंद के साके से पैदा हुई सच्चाई की आवाज बुलंद करती हैः

सच नीहां विच चमके दमके, झूठ खाक दी ढेरी।
वक्त ना बखशे कदे झूठ नूं, सच दी वाज उचेरी।
गुरु मारी नूं सिजदा करिए, सच जिसने चमकाया।
धंन कुर्बानी दो लालां दी, सारा जगत झुकाया।
जोत–फ़तहि दी जगे फ़तहिगढ़, सच दा राह दरसाऊंदी।
कुल्ल आलम दा नेरा चुकदी, चानण संग रुशनाऊंदी।
निक्कीआं जिंदां वडे साके, फरशों अरश बनावन।
नूर ईलाही, अरशी जोतां, जद धरती ते आवण।

छोटे साहिबज़ादों की शहादत के समय गुरु गोबिंद सिंघ चमकौर छोड़ कर लम्मे जटपुरे गाँव में पहुँच गये थे जहां उन्हें अपने छोटे साहिबज़ादों की

शहादत का पता चला था। राय कल्हा यहाँ के एक चौधरी थे जो हिंदू धर्म छोड़ कर मुस्लमान हो गए थे लेकिन गुरु साहिब के प्रति इस की श्रद्धा कायम थी। जब गुरु जी चमकौर से निकलकर इस गाँव के पास से गुजर रहे थे तो इसने श्रद्धा से गुरु जी का स्वागत किया तथा जब तक गुरु जी यहां रहे, इसने उनकी सेवा की थी। जब किसी ने गुरु जी को छोटे साहिबज़ादों की शहादत के बारे में बताया तो राय कल्हा ने गुरु जी की अनुमति से अपने एक खास आदमी नूरा माही को सरहिंद के दीवान टोडर मल से इस घटना की विस्तृत जानकारी लेने के लिए भेजा।

दीवान टोडर मल सरहिंद के एक अमीर व्यापारी थे और जब उन्हें यह जानकारी मिली कि गुरु गोबिंद सिंघ जी के साहिबज़ादे सरहिंद के नवाब वज़ीर ख़ान की हिरासत में हैं तो उसने विनम्रतापूर्वक हाथ जोड़कर नवाब से अनुरोध किया कि गुरु साहिब के साथ आपकी दुश्मनी है इन बच्चों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? मेरी सारी दौलत ले लो और इन बच्चों की जान बख्श दो। नवाब, दीवान टोडर मल की बातों पर क्रोधित हो गया और उसे दरबार से बाहर निकाल दिया। जब नवाब वज़ीर ख़ान के आदेश से दोनों साहिबज़ादे शहीद हो गए और यह खबर सुनते ही माता गुजरी भी चल बसी थी तो इसने अपने हाथों से उनका अंतिम संस्कार किया था।

सरहिंद के किले के आसपास का कोई भी जमींदार साहिबज़ादों और माता जी के अंतिम संस्कार के लिए अपनी जमीन देने को तैयार नहीं था। अन्त में वहाँ से कुछ दूर अत्ता नाम का एक जमींदार अपनी जमीन देने को तैयार हो गया था, परन्तु उसकी यह शर्त थी कि सोने की मुहरें रख कर जमीन प्राप्त की जा सकती है। दीवान टोडर मल ने अंतिम संस्कार हेतु आवश्यक जमीन खरीदने के लिए अपना सब कुछ बेच दिया और सोने की मुहरें रखकर जमीन खरीद ली। इस दृष्टि से यह दुनिया की अब तक की सबसे महंगी जमीन है। दीवान टोडर मल ने अपने हाथों से माता गुजरी जी और साहिबज़ादों का अंतिम संस्कार किया। गुरुद्वारा जोति सरूप साहिब अब उस स्थान पर मौजूद है जहां पर उनका अंतिम संस्कार हुआ था।

साहिबज़ादों को बचाने के लिए मलेरकोटला के दीवान टोडर मल और नवाब शेर मुहम्मद ख़ान द्वारा किए गए प्रयासों के संदर्भ लगभग सभी स्रोतों में

पाए जाते हैं। फ़ारसी लेखक कन्हैया लाल ने अपनी रचना *तारीख़–ए–पंजाब* में कहा है कि धर्म के मार्ग पर चलने वालों की बेल हरी रहती है, वे अमर हो जाते हैं, संसार में उनका नाम शुभ भावना से लिया जाता है तथा जो धर्म के मार्ग पर चलने वालों पर अत्याचार करते हैं, उनका निशान मिट जाता है। साहिबज़ादों के संबंध में टिप्पणी करते हुए यह कहता है कि गुरु जी के नाबालिग साहिबज़ादों जोरावर सिंघ और फतह सिंघ को माता गुजरी के साथ गिरफ्तार कर के सरहिंद के नवाब वज़ीर ख़ान के सामने लाया गया। सरहिंद के नवाब वज़ीर ख़ान की यह मंशा नहीं थी कि मासूम बच्चों को शहीद किया जाए परंतु सुच्चा नंद खत्री ने यत्न करके साहिबज़ादों को शहीद करवा दिया था क्योंकि उन्होंने उसके सामने कठोर शब्द बोले थे। भले ही नायब नाज़िम शेर मुहम्मद ख़ान ने नाबालिग बच्चों की शहीदी को शरीयत के खिलाफ बताया था तथा सरहिंद का रईस खत्री टोडर मल साहिबज़ादों की शहीदी के बदले में बड़ी रकम देने को तैयार हो गया था परंतु उनको बचाया नहीं जा सका। यह समाचार सुनते ही गुरु जी ने इन दोनों सज्जनों के लिये ईश्वर से प्रार्थना की और उनकी कुशलक्षेम मांगी। इसीलिए इन दोनों के राजवंश अब तक फल–फूल रहे हैं, लेकिन वज़ीर ख़ान और सुच्चा नंद के वंश खत्म हो गये हैं।

साहिबज़ादों तथा माता गुजरी की शहादत की खबर राय कल्ला द्वारा भेजे गए दूत नूरा माही के माध्यम से लंमे जटपुरा में गुरु गोबिंद सिंघ जी तक पहुंची तो गुरु जी ने कहा मेरे बेटे मरे नहीं है उन्होंने धर्म का सौदा नहीं किया है बल्कि धर्म के मार्ग पर चलकर वे सदा के लिए अमर हो गए हैं। सरहिंद को ही मरना होगा। यह कहकर उन्होंने अपने तीर से एक झाड़ी उखाड़ते हुए कहा कि इस प्रकार शत्रु को जड़ से उखाड़ के फेंक दिया जाएगा। इस घटना के बाद गुरु जी ने बादशाह औरंगजेब को एक पत्र लिखा जिसे *ज़फरनामा* कहा जाता है। इतिहास में इसे 'विजय पत्र' भी कहा जाता है। भाई दया सिंघ और भाई धर्म सिंघ गुरु जी का यह पत्र लेकर दक्षिण में बादशाह औरंगजेब के पास गए थे। काफी प्रयास के बाद वह दक्षिण के अहमद नगर में बादशाह औरंगजेब को गुरु जी का यह पत्र देने में सफल हुए थे। बादशाह को लिखी इस चिट्ठी में गुरु जी ने चारों

साहिबज़ादों का जिक्र करते हुए कहा कि क्या हुआ कि तुम ने मेरे चार बच्चों को मार डाला है पर (खालसा पंथ के रूप में) कुंडलिया नाग अभी जीवित हैः

चिहा शुद कि चूँ बच्चगाँ कुशतह चार।
कि बाकी बमाँद सतु पेचीदह मार।

ज़फ़रनामा, शिअर 78

धर्म और नैतिकता का मार्ग दिखाने वाला यह पत्र साहिबज़ादों को धर्म की रक्षा के लिए शहीद होना स्वीकार करता है। गुरु साहिबान ने धर्म का जो मार्ग दिखाया था साहिबज़ादों की शहादत ने उसी मार्ग को दृढ़ करवाया है। धर्म के मार्ग पर चलने वालों के लिए प्रेरणा पैदा करने का काम किया है। दीना कांगड़ से मुक्तसर होते हुए गुरु जी तलवंडी साबो पहुँचे तो बहुत सी सिक्ख संगत उनके दर्शन करने के लिए आने लगी। यहीं पर फूल गाँव के चौधरी रामा और तिलोका गुरु जी के दर्शन करने आए और चमकौर का हाल बताते हुए उन्होंने कहा कि तीसरे दिन चौधरी बुधी चंद की मदद से साहिबज़ादों और शहीद सिक्खों का अंतिम संस्कार कर दिया था। भाई मणी सिंघ, माता साहिब कौर और माता सुंदरी जी दमदमा साहिब पहुँचे तो माताओं ने गुरु जी से साहिबज़ादों के बारे में पूछा। गुरु जी ने माताओं को दिलासा देते हुए कहा :

इन सिखन के सीस पै वार दिए सुत चार।
चार मुये तो किआ हुआ जीवित कई हजार।

तलवंडी साबो से गुरु गोबिंद सिंघ जी नांदेड़ चले गए जहाँ उन्होंने बाबा बंदा सिंघ बहादर को सिंघ सजा कर तथा खालसा पंथ का आगू नियुक्त कर के जुल्म का नाश करने के लिए पंजाब भेजा था। गुरु जी के आशीर्वाद से उसने जल्दी से खालसा सेना तैयार की और समाना और सढौरा में अत्याचारियों को दंडित किया। जब वह सरहिंद की ओर बढ़ा तो सिक्खों ने पूरे जोश और उत्साह से उसका समर्थन किया था। सिक्ख सरहिंद के युद्ध में भाग लेना अपना धार्मिक कर्तव्य समझ रहे थे क्योंकि यहाँ के नवाब ने छोटे साहिबज़ादों को इसी स्थान पर यातनाएं देकर शहीद कर दिया था। जिन ज़ालिमों ने साहिबज़ादों को शहीद करने में भूमिका निभाई थी, उन्हें चुन–चुन कर मार दिया गया।

इस युद्ध का लक्ष्य अत्याचारी को सुधारना या दंडित करना था, हिन्दू–मुस्लमान का नहीं। इस लिये वज़ीर ख़ान और सुच्चा नंद को एक जैसे दिन देखने के लिये विवश होना पड़ा था। बाबा बंदा सिंघ बहादर द्वारा सरहिंद की विजय के बाद इस शहर की स्थिति और जुल्म करने वालों का वर्णन करते हुए मुहम्मद कासिम अपनी रचना *इबारतनामा* में लिखता है कि वज़ीर ख़ान के दरबारी सुच्चा नंद की हवेली शायद इसी दिन के लिए बनी हुई थी, उसने संपत्ति इसी दिन के लिए एकत्र की थी कि उसको लूट लिया जाए। उसके स्वर्ग जैसे महलों में कौओं के घोंसले बन गये थे। रब्ब बहुत महान है जिसकी दरगाह से निर्बल चींटी सांप को तथा एक कमजोर मच्छर खूंखार हाथी को मारने का बल प्राप्त करते हैं। मैंने अपने आस–पास के विश्वसनीय लोगों से सुना है कि नवाब वज़ीर ख़ान के शासनकाल में ऐसा कौन सा अत्याचार था जो वह अन्यायी (सुच्चा नंद) गरीबों पर नहीं करता था और फसाद का कौन सा बीज था जो इस ने अपने लिये नहीं बोया, जिसका फल इसे प्राप्त हुआ है।

साहिबज़ादों की शहादत ने जुल्म के खिलाफ लड़ने वालों के मन में एक नया जोश भर दिया था। साहिबज़ादों की शहादत के बाद बाबा बंदा सिंघ बहादर का चार वर्षीय पुत्र शहीद हुआ था। इन शहादतों ने दमन के खिलाफ संघर्ष करने वाले सिंघों तथा सिंघनियों के मन में धर्म के प्रति दृढ़ संकल्प पैदा कर दिया था, जिसके परिणामस्वरूप वे अठारहवीं शताब्दी के जुल्म की आंधी का मुकाबला करने में सक्षम हो गये थे। इस दौर में सिक्ख महिलाओं और उनके दूध पीते छोटे बच्चों को भी जुल्म सहना पड़ा था। बच्चों को उनकी माताओं के सामने शहीद कर दिया जाता और जेलों में उनके साथ कठोर व्यवहार किया जाता लेकिन उन्होंने पूरे दृढ़ संकल्प के साथ सभी अत्याचारों को सहन किया और अपना धर्म परिवर्तन नहीं किया। उन्हें यह धार्मिक प्रेरणा गुरु अर्जन देव जी, गुरु तेग बहादर जी की शहादतों तथा गुरु गोबिंद सिंघ जी के साहिबज़ादों की कुर्बानियों से प्राप्त हो रही थी जिन्होंने धर्मांतरण की अपेक्षा शहादत स्वीकार कर ली थी।

इस तरह साहिबज़ादों की शहादत ने कई नए कीर्तिमान स्थापित किए थे। उन्होंने गुरु ग्रंथ सहिब जी में दरज 'पहिला मरणु कबूलि' की आवाज बुलंद करते

हुए गुरु नानक देव जी की विचारधारा से समरसता स्थापित की थी। उनके दादा, गुरु तेग बहादर जी ने जबरन धर्मांतरण के विरोध में अपने धार्मिक मूल्यों की रक्षा करने का संकल्प व्यक्त किया था। उन्होंने अपने पिता गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा दमन के खिलाफ चलाए गए अभियान के नक्शेकदम पर चलते हुए नई और पुरानी पीढ़ी के बीच की खाई को समाप्त कर दिया था। साहिबज़ादों की शहादतों ने उनके भीतर छुपे हुए प्रभु भक्ति, धर्म प्रेम, जुझारू जरनैल, शूरवीर योद्धा आदि गुणों को प्रकट कर दिया था जो उन्हें अपनी दादी माता गुजरी जी द्वारा गुरु परम्परा की कहानियों को सुनाकर संचारित किये गये थे। साहिबज़ादों की शहादत और व्यक्तित्व जहां युवा पीढ़ी को धर्म के प्रति दृढ़ संकल्प और प्रतिबद्धता पैदा करने का मार्ग दर्शाता है वहीं जबर तथा जुल्म के खिलाफ डट कर खड़े होने के लिए प्रेरणा पैदा करता है। साहिबज़ादों की शहादत ने सिक्ख कौम की नींव को मजबूत करने का कार्य किया है, जिसे व्यक्त करते हुए मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं:

जिस कुल जाति देश के बच्चे दे सकते हैं यों बलिदान,
उसका वर्तमान कुछ भी हो पर भविष्य है महा महान।

गुरुकुल, पन्ना 205

बस एक हिंद में तीरथ है यात्रा के लिए।
कटाए बाप ने बच्चे जहां खुदा के लिए।

(गंज-ए-शहीदां)

जुझार सिंघ अजीत सिंघ, युद्ध करि जूझे चमकौर।
सीरंद बिखे ज़ोरावर सिंघ, फतहि सिंघ की ठौर।

(कथा गुरु जी के सुतन की)

आओ अणखां वालियो, गाथा लईए गा।
जो सदा सुरजीत ने, दईए सीस झुका।

(गुरदेव सिंह शांत)

पीती रत्त जिस ने दादी पोतियां दी,
ढहि ढेरी सी उह सरहंद हो गई।
जित्थे चिणे सी गुरु दे लाल दोवें।
पूजन योग अज्ज उह कंध हो गई।

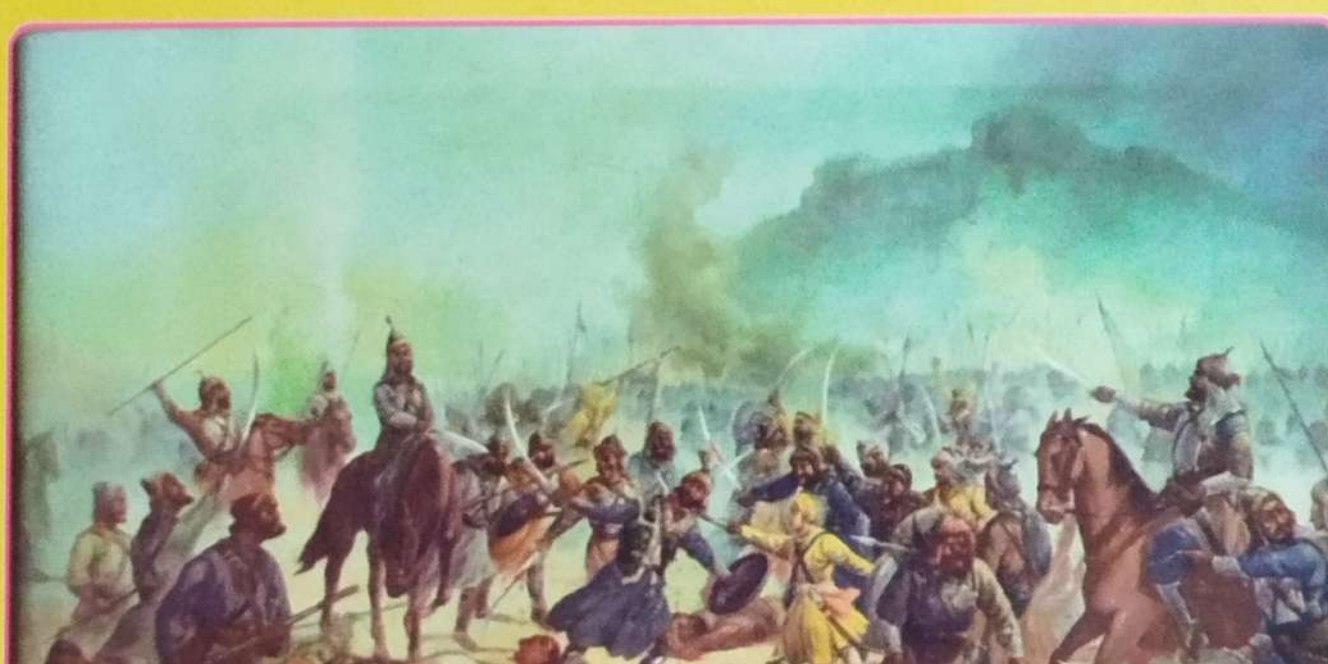
(लवजोत सिंघ)

हम जान दे के औरों की जानें बचा चले।
सिक्खी की नींव हम हैं सरों पर उठा चले।
गुरिआई का है किस्सा जहां में बना चले।
सिंघों की सल्तनत का है पौधा लगा चले।

(शहीदानि वफ़ा)



साहिबज़ादा अजीत सिंह जी चमकौर के युद्ध में
मुगल फौज का मुकाबला करते हुए



साहिबज़ादा जुझार सिंह जी चमकौर के युद्ध में
शूरवीरता के जौहर दिखाते हुए